एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

स्ट्रॉबेरी की खेती

(*महेंद्र कुमार गोरा)
पीएचडी शोध छात्र, उद्यानिकी विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर 313001
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mahendragora31@gmail.com

किसान पारंपरिक फसलों की खेती के साथ ही बागवानी फसलों की खेती की ओर भी ध्यान दे तो अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। बागवानी फसलों की सबसे बड़ी खासियत ये हैं कि इनका बाजार में दाम अच्छा मिलता है। एक बार यदि सही तरीके से इसकी खेती पर ध्यान दिया जाए तो कई सालों तक इससे लाभ कमाया जा सकता है। आम, अनार, केला, नाशपाती सहित स्ट्राबैरी की खेती किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित हो रही है। बागवानी फसलों की खेती के लिए सरकार से भी सहायता दी जाती है। जिससे किसानों को लाभ होता है। इसी कड़ी में स्ट्राबैरी की खेती किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित हो सकती है। इस फल के दाम बाजार मे अच्छे मिल जाते हैं। यदि सही तरीके से इसकी खेती की जाए तो इससे काफी अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। आज हम ट्रैक्टर जंक्शन के माध्यम से आपको स्ट्राबैरी की आधुनिक पद्धिति से की जाने वाली खेती की जानकारी दे रहे हैं ताकि आप बिना नुकसान के इससे अच्छा लाभ प्राप्त कर सकें।

स्ट्रॉबेरी फ़रागार्या जाति का एक पेड़ होता है। इस फल की खेती पूरे विश्व में की जाती है। इसके फल को भी इसी नाम से जाना जाता है। ये चटक लाल रंग की होती है। इसे ताजा फल के रूप में खाया जाता है। इसके अलावा इसका प्रयोग जैम, रस, पाइ, आइसक्रीम, मिल्क-शेक आदि बनाने में किया जाता है। स्ट्रॉबेरी में कई आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हमारी सेहत के लिए जरूरी होते हैं। स्ट्रॉबेरी की बढ़ती कीमत और मांग के कारण किसानों की रूचि स्ट्रॉबेरी की खेती की ओर होने लगी है।

स्ट्रॉबेरी में पाए जाने वाले पोषक तत्व: स्ट्रॉबेरी एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन सी, विटामिन-बी 1, बी 2, नियासिन, प्रोटीन और खनिजों का एक अच्छा प्राकृतिक स्रोत है। इसमें मिनरल्स भरपूर मात्रा में होते हैं। स्ट्रॉबेरी में विटामिन सी, एंटीऑक्सीडेंट, एंटीइंफ्लेमेटरी, फोलेट, मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे पोषक तत्व भरपूर रूप से होते हैं, जो शरीर की कई समस्याओं को दूर करने में लाभकारी हैं। यह वजन कम करने से लेकर कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचाव करने में मददगार होता है। लेकिन याद रहे इसका अधिक प्रयोग कई प्रकार से शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए इसका सेवन सीमित मात्रा में ही करना चाहिए।

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए जलवायु और भूमि: यह फसल शीतोष्ण जलवायु वाली फसल है जिसके लिए 20 से 30 डिग्री तापमान उपयुक्त रहता है। तापमान बढ़ने पर पौधों में नुकसान होता है और उपज प्रभावित हो जाती है। अब बात करें इसकी खेती के लिए मिट्टी की तो इसकी खेती विभिन्न प्रकार की भूमि में की जा सकती है। लेकिन रेतीली-दोमट भूमि जिसमें जल निकास की अच्छी व्यवस्था हो, इसके लिए सबसे

अच्छी रहती है। मिट्टी पीएच मान 5 से 6.5 तक मान के बीच होना चाहिए। इसके अलावा बलुई दोमट और लाल मिट्टी भी स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए अच्छी मानी जाती है |

स्ट्रॉबेरी के पौधे लगाने का उचित समय: स्ट्राबेरी के पौधों की रोपाई 10 सितंबर से 10 अक्टूबर तक की जा सकती है। रोपाई के समय अधिक तापमान होने पर पौधों को कुछ समय बाद यानि 20 सितंबर तक रोपाई का काम शुरू किया जा सकता है।

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए उन्नत किस्में: भारत में स्ट्राबेरी की बहुत सी किस्में का उत्पादन किया जाता है जिसमें कमारोसा, चांडलर, ओफ्रा, फेस्टिवल ब्लैक मोर, स्वीड चार्ली, एलिस्ता और फेयर फॉक्स आदि किस्मों की खेती की जाती है।

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए कैसे करें बेड तैयार: स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए सबसे पहले बेड तैयार करें। इसके लिए खेत में आवश्यक खाद उर्वरक देने के बाद बेड बनाने के लिए बेड की चौड़ाई 2.5- 3 फिट रखनी चाहिए। वहीं बेड से बेड की दूरी डेढ़ फिट रखी जाती है। बेड तैयार होने के बाद उस पर टपक सिंचाई की पाइप लाइन बिछा दें। पौधे लगाने के लिए प्लास्टिक मल्चिंग में 20 से 30 सेमी की दूरी पर छेद करें। जब खेत में लगाए गए पौधों की जमीन को चारों तरफ से क्वालिटी प्लास्टिक फिल्म द्वारा अच्छी तरह ढक दिया जाता है, तो इस विधि को प्लास्टिक मल्चिंग कहा जाता है। इस तरह पौधों की सुरक्षा होती है और फसल उत्पादन भी बढ़ता है। प्लास्टिक मल्चिंग विधि के तहत स्ट्रॉबेरी के पौधे लागते समय पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखनी चाहिए। वहीं बेड से बेड की दूरी 1.5 रखें। इस तरह प्रति एकड़ खेत में करीब 17 से 20 हजार पौधे लगाए जा सकते हैं। प्लास्टिक मल्चिंग विधि के तहत स्ट्रॉबेरी का उत्पादन करने पर प्राकृतिक आपदा का प्रकोप कम होता है, फसल सुरक्षित रहती है।

स्ट्रॉबेरी के लिए खाद और उर्वरक प्रयोग:स्ट्रॉबेरी का पौधा काफी नाजुक होता है। इसलिए इसे समय-समय खाद और उर्वरक देना आवश्यक होता है जिसका प्रयोग आपको खेत की मिट्टी की परीक्षण रिपोर्ट को देखकर करना चाहिए। हालांकि साधारण रेतीली भूमि में 10 से 15 टन सड़ी गोबर की खाद प्रति एकड़ की दर से भूमि तैयारी के समय बिखेर कर मिट्टी में मिला दी जाती है।

स्ट्रॉबेरी की सिंचाई: इस पौधे के लिए उत्तम गुणवत्ता (नमक रहित) का पानी सिंचाई के लिए प्रयोग में लिया जाना चाहिए। पौधों को लगाने के तरंत बाद सिंचाई करनी चाहिए। यदि टपक सिंचाई पद्धिति का उपयोग किया जाए तो पानी की बचत के साथ ही पौधे निर्धारित मात्र में पानी मिल सकेगा।

स्ट्रॉबेरी की तुड़ाई: जब फल का रंग 70 प्रतिशत पक हो जाए तो इसे तोड़ लेना चाहिए। यदि बाजार दूरी पर है तब थोड़ा सख्त अवस्था में ही तोड़ लेना चाहिए। इसकी तुड़ाई अलग-अलग दिनों में करें। तुड़ाई के समय स्ट्रॉबेरी के फल को नहीं पकड़े, ऊपर से डंडी पकड़ें जिससे फल को नुकसान नहीं पहुंचेगा और फल की तुड़ाई का काम भी आसान होगा।